ISSN 2394-5303

International Peer reviewed Research Journal

Printing Area

Peer Reviewed International Multilingual Research Journal

Issue-91, Vol-01, July 2022

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

27) सभ्यताओं का टकराव सिद्धान्त और इसकी प्रासंगिकता
डॉ. (श्रीमती) दर्शना, बरहज, देवरिया ||107

28) शैक्षणिक संस्थानों के विकास में पुस्तकालयों का महत्व
डॉ. दिनेश कुमार सक्सेना, कानपुर (उ.प्र.) ||111

29) विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले विद्यार्थियों का आवासीय स्थिति....
विजय कुमार, डोभी, जौनपुर (उ.प्र.) ||114

30) सूक्तीनां माहात्म्य (शारदामणिलीला चरित महाकाव्यस्य विशेष सन्दर्भे)
डॉ. विभूति, बुलन्दशहर (उ.प्र) ||119

31) अयोध्या मण्डल के विद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य एवं बधिर विद्यार्थियों की....
मनीषा देवी, डॉ. शिखा वर्मा, अयोध्या (उ.प्र.) ||120

32) उत्तराखण्ड की मूर्तिकला में जीव–जन्तुओं के अंतर्गत सिंह तथा गजांकन
नेहा खोलिया, डॉ. संजीव आर्य, अल्मोड़ा ||125

33) वर्तमान समय में अनुसूचित जाति का स्वरूप (शिक्षा पर जाति व्यवस्था का कुप्रभाव)
दीपमाला, काशीपुर, ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड) ||128

34) संत दादू दयाल वाह्य आडम्बर एवं हिंसा पर दृष्टिकोण
डॉ. प्रतिभा, अम्बेडकर नगर, उत्तर प्रदेश ||132

35) कबीर समाज दर्शन की प्रासंगिकता : एक अध्ययन
डॉ. राम बाबू मेहर, जैसीनगर सागर, (म.प्र.) ||134

36) तैत्तिरीय उपनिषदातील उद्धृत नैतिक मूल्य वर आधारित अनुदेशनात्मक....
श्री. जगदिश केशव चित्ते, प्रा. डॉ. सुनयना ज. कडले, जुहू, मुंबई ||137

37) डॉ. शरद सिंह लिखित 'तीली तीली आग' कहानी संग्रह में 'स्त्री....
नयन औदुंबर भादुले, नांदेड ||142

38) नैनीताल जनपद के सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में....
भारती भण्डारी, डा. (श्रीमती) सविता भंडारी, चित्तौडगढ राजस्थान ||146

39) फ्लोराइड युक्त पेयजल का किशोरियों के शारीरिक विकास एवं सामाजिक....
सुश्री किरण चौहान, डॉ. मंजु शर्मा, इन्दौर (म.प्र.) ||149

www.vidyawarta.com/03 — http://www.printingarea.blogspot.com

नूतन प्रकाशन. पुणे
५. राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण, १९८६, विभाग ८ पोट मुद्दा मूल्यशिक्षण ८४,८.५,८.६
६. म.रा.शै.सं.व प्र.प.पुणे.मूल्यांचे शिक्षण — शिक्षकांसाठी हस्तपुस्तिका.
७. http%//egyankosh-ac-in/bitstream/123456789/46814/1/Unit&7-pdf
८. https%//sanskritdocuments-org/doc_upanishhat/shikshaavalii-html
९. https%//en-wikipedia-org/wiki/Taittiriya_Upanishad
१०. https%//vishwakosh-marathi-gov-पदध्नीतिशास्त्र

❑❑❑

37

डॉ. शरद सिंह लिखित 'तीली तीली आग' कहानी संग्रह में 'स्त्री संघर्ष' के विविध रूप

नयन औदुंबर भादुले
(शोधार्थी)
स्वा. रा. ति. म. विश्वविद्यालय, नांदेड

****

भूमिका:

मानवीय जीवन एवं व्यवहार में संघर्ष को महत्वपूर्ण स्थान है। स्त्री समाज का एक अंग है। वह समाज में अपने महत्व और अस्तित्व को स्थापित करना बखूबी जानती है। संघर्ष करना उसकी स्थायी प्रवृत्ति है। इसी कारण आज पुरुषप्रधान देश में स्त्री ने पुरुष के समान अपना स्थान बना लिया है। स्त्री के बारे में विद्वदजन अलग—अलग विचार रखते हैं वे निम्न हैं: अरस्तू के मतानुसार,''औरत कुछ गुणवत्ताओं की कमियों के कारण ही औरत बनी है, वह एक प्रासंगिक जीवन है।''[१] अर्थात अरस्तु के मतानुसार वह आदमी की एक अतिरिक्त हड्डी से निर्मित है। अत: मानवता का स्वरूप पुरुष है और पुरुष औरत के लिए परिभाषित नहीं करता,बल्कि पुरुष से संबंधित ही स्त्री परिभाषित है। नारी जो है पुरुष के लिए एक भोग की वस्तु है इसके अलावा कुछ नहीं! डॉ.ऋषभदेव शर्मा के अनुसार, ''नारी उस दो राहों पर खड़ी है जहाँ एक ओर चार दिवारी है और दूसरी ओर प्रगतिवाद। यदी वह चार दिवारी लांघना चाहती है तो उसे तलाकनामें तक को भी तैयार रहना होगा।''[२] स्त्री एक ओर शोषण का शिकार होती है तो दूसरी र शोषण के खिलाफ लड़ती रहती है।एक ओर बाजारवाद से प्रभावित होकर धन की चाह में नैतिक, अनैतिकता को भूल रही हैं तो दूसरी ओर अपने आप को शोषण से बचाने के लिए लड़ रही है। स्त्री का जीवन निरंतर संघर्ष से भरा हुआ

हैं। ओर डॉ. शरद सिंह स्त्री संघर्ष को इस तरह पाठकों के सामने लाती है कि पाठक उस बात पर सोचने के लिए मजबूर होता हैं। उनकी कहानियों में नए कथ्य की खोज मिलती है। वह समाज में उपस्थित उन बिन्दुओं पर लिखना पसन्द करती हैं जो प्राय: अच्छूते रह जाते हैं। स्त्री जीवन का सूक्ष्म विश्लेषण इनके कथानकों की एक विशेषता हैं। उनकी 'तली तीली आग' इस कहानी संग्रह की १७ कहानियों में स्त्री के विभिन्न रूप और संघर्ष दिखाई देता हैं। एक में निम्नवर्ग की स्त्री है तो, दूसरे में मध्यमवर्गिय या कहीं पर घरेलू स्त्री हैं तो कहीं पर कामकाजी। इस तरह से विभिन्न परिस्थितियों में जुझती स्त्री का चित्रण डॉ. शरद सिंह 'तली तीली आग' कहानी संग्रह की कहानियों के माध्यम से हमारे सामने रखती है। इसमें शारीरिक शोषण, मानसिक शोषण, स्वतंत्र अस्तित्व के लिए संघर्ष, दांपत्य जीवन की पारंपरिक मान्यताओं का विरोध करते संघर्ष, अकेली स्त्री का संघर्ष, सामाजिक संघर्ष आदि बड़ी सूक्ष्मता से चित्रित हैं।

शारीरिक शोषण:

मरद 'कहानी में सुंदरा' का गाँव के सरपंच द्वारा शारीरिक शोषण होता है। वह इसका विरोध करना चाहती है शुरूवात में कुछ कर नहीं पाती। उसका साथ कोई नहीं देता। वह अकेली कुछ नहीं कर पाती लेकिन जब बेटी पर बात आती है तो वह डटकर खड़ी हो जाती है। कहती है, "तू बैठ के सोच! आ के देखे तो साला सरपंच, गाड़ दूंगी उसे खुड्डी में. .. अब मैं वो सुंदरा नहीं कि तेरे कहे से चुप बैठूं, अब मैं मां हूं चमेली की, समझा!"[३]

'तीली तीली आग' कहानी में प्रितो अपने आर्थिक परिस्थिति के कारण ही एक अस्पताल में नौकरी तो पा लेती है पर वहा डॉक्टर से शोषित होती है। वह कहती है, ''जलना तो पड़ता ही है हर हाल में। एक लड़की को तो जलना ही पड़ता है। यहां कौन ऐसी है जल नहीं रही है? कोई डॉक्टर के हाथों, कोई पेशंट के हाथों तो कोई पेशंट के रिश्तेदारों के हाथों। हर कोई अपने प्रॉपर्टी समजता है एक नर्स को''[४] 'आठगुना आठ सुख' कहानी में भी एक कामवालीबाई पर घर का साहब अत्याचार करता है। शोषण के विरुद्ध वह आवाज नहीं उठा पाती। 'वे पाँच लड़किया और सपने' कहानी में जो युवा पीढ़ि हैं अपने – सपनों को साकार करने की चाह रखती है। चार लडकियाँ वेश्यावृती में लग जाती है। तथा सहती रहती है। 'घोर– घोर रानी, कित्ता–कित्ता पानी?' में भी 'देवयानी' बिना विवाह के मां बनती है पर विरोध नहीं कर पाती है।'किस किस को करवाओगे केशू' और 'गीला तौलिया', 'रागपुराण' आदि कहानियों में शारीरिक शोषण का चित्रण किया गया हैं। 'एक अदद प्यार के लिए' कहानी में भी 'विपुला' नामक स्त्री के रूप का चित्रण मिलता हैं। शादी की उमर तो नहीं पर दमित वासना की पूर्ति के लिए अन्यपुरूष के संपर्क में आना चाहती हैं। वह प्यार पाने की कोशिश करती है।

मानसिक शोषण:

आज के दौर में स्त्री में बहुत ही परिवर्तन हो चुका हैं। उसकी मानसिकता अब बदल चुकी है। शोषण एवं जुल्मों के विरोध में संघर्ष करती दिखाई पड़ती है। 'मरद' कहानी में सुंदरा शोषित होने पर खुलकर विरोध नहीं कर पाती लेकिन उस मानसिक शोषण के विरुद्ध संघर्ष की आग को छुपा नहीं पाती। 'तीली तीली आग' कहानी में प्रितो नामक लड़की अस्पताल में नर्स की नौकरी करती है लेकिन डॉक्टर द्वारा प्यार में फंसती हैं। 'वे पाँच लडकियाँ और उनके सपने' इस कहानी में इन लड़कियोंका शारीरिक ही नहीं तो मानसिक शोषण भी होता है। आज नारी शोषण हर एक क्षेत्र में होता दिखाई दे रहा हैं चाहे वह घर हो या ऑफिस।' एक अदद प्यार के लिए' इस कहानी में विपुला प्यार को पाने की चाह में अपने आपको समर्पित करना चाहती है। पर नहीं कर पाती इसकारण वह मानसिक विडंबना से तड़पते हुए संघर्ष करती है। ''अं...नहीं तो...बस, यूं ही।'' एक बार फिर विपुला अपने यह कहने की लालसा को दबा गई कि तुमसे प्यार करना है। कोई लाभ भी तो नहीं है अब कहने का। उसके मन में उठा ज्वार अब उतर चुका है। लहरों के पीछे छूट गई हैं मरी हुई मछलियों–सा बुझा हुआ उत्साह और निर्जीव सीपियों की तरह ठंडी देह। इस बत्तीस वर्ष की लंबी उम्र में से पूरे सोलह वर्ष अपनी देह की आंच को आत्मनियंत्रण की ठंडी राख

के नीचे दबाए रखा... अब तो देह की आंच को भी राख के नीचे दबे रहने की आदत पड़ चुकी है। अब आसान नहीं है इस आंच को हवा देना, और फिर... सिर्फ एक बार हवा देकर ही क्या होगा... क्या वह सुलगाए रख सकेगी इस आंच को ?[५]

स्वतंत्र अस्तित्व की खोज के लिए लगातार संघर्ष:

डॉ. शरद सिंह के कहानी संग्रह 'ताली तीली आग' में 'मरद' कहानी की 'सुंदरा' पारंपरिक छवि को तोड़ती है तथा अपने नये रूप को गढ़ती दिखाई देती है। इसके साथ ही 'प्रीतो', 'आठ गुण आठ सुख' में कामवाली बाई, 'वो पाँच लड़कियां' की मानसिक विडंबन का चित्रण किया है। 'घोर–घोर रानी, कित्ता–कित्ता पानी? 'में देवयानी बिना विवाह के मां बन जाती है। तथा समाज के विरुद्ध संघर्ष करती है।

दाम्पत्य जीवन की पारस्परिक मान्यताओं का विरोध :

दांपत्य जीवन में परस्पर सहयोग अत्यावश्यक हैं। दांपत्य जीवन में कोई भी दरारें आए, कितनी भी मुश्किल आए, कठीनाईयाँ आए, उन्हें सोच समझकर, सामना करना होता हैं। दापत्य जीवन की मान्यताओं को समझने की क्षमता होनी चाहिए। मान्यताओं के प्रति अपनेपन का भाव होना चाहिए तभी पति–पत्नी का दापत्यजीवन सही रूप ग्रहण करता है।

पति और पत्नी दोनों में भेद–भाव न हो, अभिमान न हो गर्व, तो जीवन में दरार पैदा नहीं होगां दोनों पति पत्नी के बीच संघर्ष नहीं होगा। जिंदगी को समझने की क्षमता दोनों में हो तो तभी दापत्य जीवन की मान्यताओं में कोई संघर्ष नहीं होगां। विवाह के प्रति परंपरागत दृष्टिकोण निरर्थक हो गया हैं। इसी तरह का चित्रण शरदसिंह के कहानीयों में दिखाई देता हैं। 'मरद' कहानी में सुंदरा का विवाह रमेसर से होता है विवाह के उपरांत जीवन में कोई बाधाएँ नहीं थीं। घर में शौचालय न होने के कारण, शौच के लिए गाँव से बाहर जाना पड़ता था। सास कुछ दीन से बिमार थी, इसलिए सुंदरा अकेली ही सुबह–सुबह शौच के लिए जाती थीं। इस अवसर का लाभ गाँव का सरपंच ने उठाया और सुंदरा का बलात्कार किया। तब सुंदरा पर क्या बीती ये कोई न जान पाया।शायद उसका पति रमेसर भी नहीं। इस हादसे के बाद सुंदरा के दापत्य जीवन में दरार पैदा हो गई। सुंदरा सरपंच के विरोध करने पर उसके सास और पति ने उसका साथ न दिया। इसलिए उनके दापत्य जीवन में संघर्ष शुरू हुआ। 'सुअरबाडे की जान्हवी' कहानी में जान्हवी का पति चमन हैं कुछ दिनों से उसे शक होने लगा। तब दांपत्य जीवन में दरार शुरु हुई। ''तू यहां बैठी–बैठी गुलछर्रे उड़ा रही है? और मैं... मैं तेरी बेटियों के पोतड़े धो–धोकर कंगाल हुआ जा रहा हूं... चल, हजार रुपये दे मुझे।'[६] स्त्री की नजर में पति बुरा ही सहीं लेकिन दापत्य जीवन की मान्यता को हमारी भारतीय परंपरानुसार पति ही परमेश्वर होता।

अकेली स्त्री का संघर्ष:

मरद' कहानी में सुंदरा है जो शोषण का विरोध अकेली करती है। 'तीली तीली आग' कहानी में प्रीतो भी काम की तलाश में शहर आती है, वहाँ उसे एक नर्स की नौकरी तो मिलती है लेकिन अकेली होने पर समाज में भेडियां जैसे पुरुषों से बचने के लिए एक डॉक्टर के प्यार में शारीरिक संबंध स्थापित करती है। समाज से लड़ती नारी की जिजीविषा का चित्रण यहाँ लेखिका प्रस्तुत करती है। 'आठ गुना आठ सुख' कहानी में एक कामवाली बाई अपनी आर्थिक परिस्थिति से जुझती हुई एक घर में काम करने आती है पर वहाँ उस घर का मालिक उसपर बुरी नजर डालता है, उसका शोषण करता है। हर स्तर में स्त्री की स्थिति एक जैसी है चाहे वो शिक्षित हो या अशिक्षित, वह कहीं पर भी सुरक्षित नहीं है। ' वे पाँच लड़किया और सपने' में भी पांच लड़कियां अकेले ही अपने बलबूते पर खड़े होने के चाह में बुरा रास्ता अपनाती है तथा अपने सपने साकार करने की चाह में और आर्थिक दुस्थिति के कारण बहकावे में आकर वेश्यावृत्ती को भी अपनाने में हिचकिचाति नहीं है। 'घोर– घोर रानी कित्ता–कित्ता पानी', 'बोलो बुआ बोलो' 'एक अदद प्यार के लिए', 'गीला तौलिया', 'एक खोया हुआ आदमी' 'बहीखाता' 'शाम को देखूगां', 'गंदले मुँहवाली लड़की, आदि कहानियों में स्त्री का जो रूप शरद सिंह ने चित्रित किया है वह अकेली ही संघर्ष करती है। तथा स्त्री को केंद्र में रखकर उसके विभिन्न रूपों का संघर्षमय चित्रण किया हैं।

आर्थिक संघर्ष:

संघर्ष हर एक व्यक्ति अपने जीवन में करता है। तथा अपने इच्छाओं को पुरा भी करता है। निम्न तथा मध्यमवर्गको की आर्थिक स्थिति से मुक्ति पाने की कोशिश के लिए किया जानेवाला संघर्ष यहाँ लेखिका चित्रित करती है। 'मरद' कहानी की नायिका सुंदरा आर्थिक परिस्थिति और सरपंच के विरुद्ध संघर्ष करती है। 'ताली तीली आग' की प्रीती 'आठ गुना आठ सुख' की कामवाली बाई, 'वो पांच लड़कियां और सपने' 'वो गंदले मुहवाली में चित्र बनाने वाली लड़की जो जहाँ पर काम करती हैं वहाँ खुद उसने बनाया चित्र देखकर हैराण होती है। तथा पूछ लेती है... ,''कित्ते का है?'' लड़की की सांसें धौंकनी के समान चलने लगीं। ''तीन हजार का।'' मिसेज अवस्थी ने गर्व से बताया। ''तीन हजार ?'' लड़की की आंखें हैरत से खुली रह गईं। साहब लोग तो उसे सिर्फ तीन रुपये देते हैं, वह भी बापू के हाथ में थमा जाते हैं।''[७] इसतरह कहानियों में आर्थिक संघर्ष का चित्रण किया हैं।

सामाजिक संघर्ष:—

व्यक्ति को समाज में रहते हुए समाज के तौर तरिके, रीति रिवाज एवं पद्धतियों को अपनाना पढ़ता हैं। इनका विरोध करके व्यक्ति समाज मै जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। स्त्री 'मरद' कहानी की सुंदरा,'तीली तीली आग कहानी' की प्रितो, 'वे पांच लडकियां और सपने' की पाँच लडकियां, 'छोर— छोर रानी, कित्ता— कित्ता पानी' की देवयानी, 'एक अदद प्यार के लिए' कहानी की विपुला, आदि कहानियों में लेखिका के बदलते हुए नये उभरने विभिन्न रूपों को चित्रित करती है।

निष्कर्ष:

अंतत: हम कह सकते है, डॉ. शरद सिंह अपने कहानियों में स्त्री संघर्ष को बड़ी सूक्ष्मता से रेखांकित करती हैं। वह लगभग हर वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है। स्त्री का घेरे में फंसे रहने वाला रूप तो कहानीकार ने सामने रखा ही है, उसे तोड़कर भाग निकलने वाला रूप भी यहां मौजूद है। उनकी कहानियों में जीवन के हर एक पहलू में स्त्री संघर्ष करती है। चाहे वो मानसिक संघर्ष हो या आर्थिक संघर्ष, पारिवारिक संघर्ष हो या दैहिक शोषण के विरुद्ध संघर्ष आदि बातों में वह संघर्ष करती ही है। इस प्रकार लेखिका स्त्री संघर्ष को रूप में चित्रित करती हैं।

संदर्भ सूची:

डॉ. ऋषभदेव शर्मा, स्त्री सशक्तिकरण के विविध आयाम, पृ. संख्या.१४२

वहीं, पृ. संख्या. ३५१

तीली तीली आग, डॉ. शरद सिंह, सुनिल साहित्य सदन, पृ. संख्या १९

वहीं, पृ. संख्या.२२

वहीं, पृ. संख्या.१०३

वहीं, पृ. संख्या.७०

वहीं, पृ. संख्या.१२७

❑❑❑

Publisher & Owner
Archana Rajendra Ghodke

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh, Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra)
vidyawarta@gmail.com
Cell : 098 50 20 32 95

& Edit By
Dr.Gholap Bapu Ganpat

Indexed

IMPACT 8.012 iijif FACTOR

ISSN 2394-5303